कितने गधे?
तुर्की लोक कथा

नन्ही घंटियों की झंकार और छोटे खुरों की तेज चाल
ही उस एकांत गायक के संगीत में विघ्न डाल रहे थे.

नसरुद्दीन होजा, आटा चक्की से गधों को वापस ला रहा था.
गधों की काठियों पर ताजे पिसे गेहूं के आटे की बोरियां लदी थीं.

होजा की पगड़ी पर गर्म तुर्की सूरज सीधे चमक रहा था. गधों के खुरों से निकलने वाली धूल उसके चारों ओर उड़ रही थी. गधों की चाल उसे आगे-पीछे हिला रही थी. लेकिन नसरुद्दीन होजा आज काफी खुश लग रहा था.
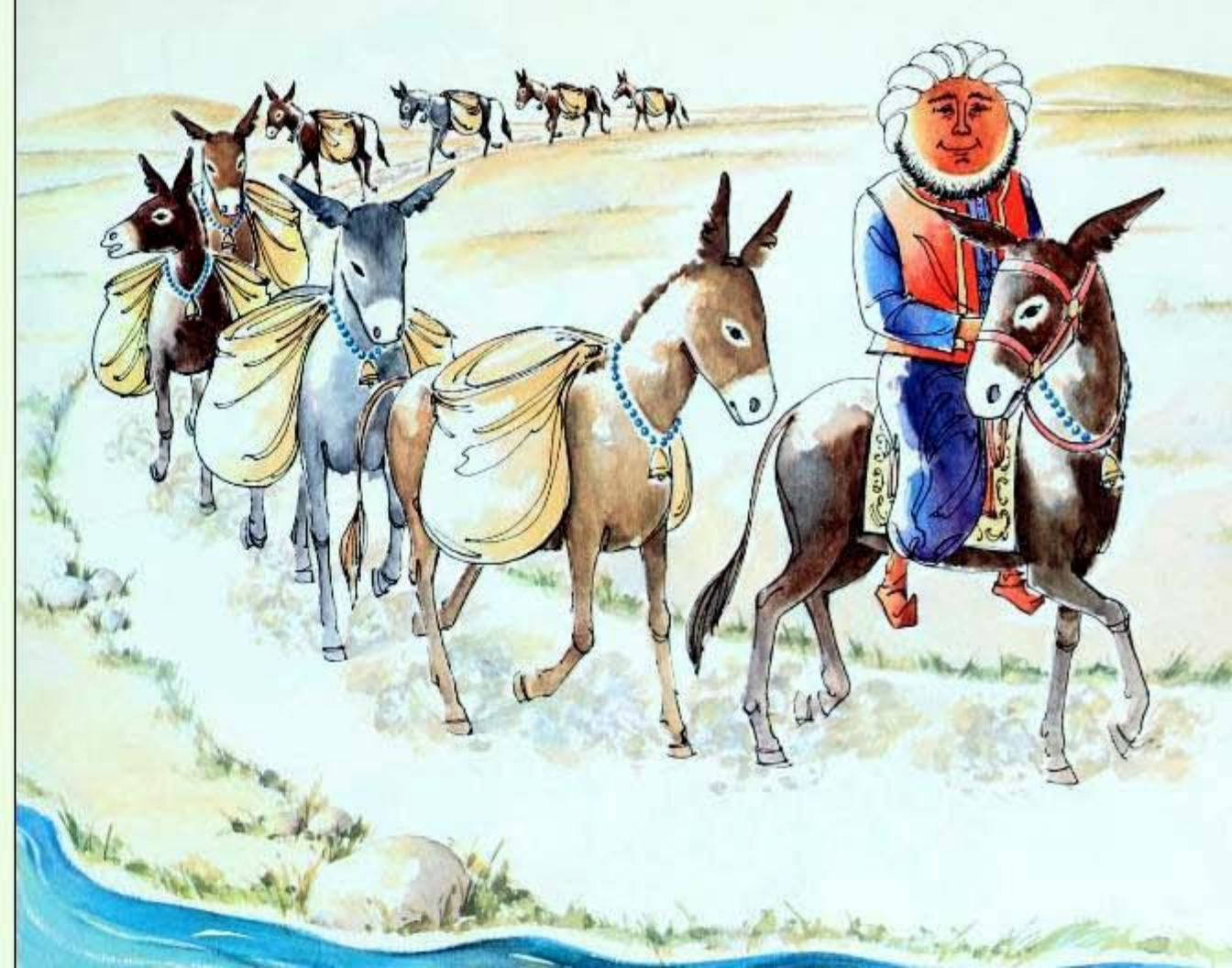
"मैं उन्हें दिखाऊंगा," उसने चकित होकर कहा. "उन्होंने अपने गधों और गेहूं की देखभाल के बारे में मुझे तमाम सलाह दी है, जैसे कि मैं बिल्कुल अनाड़ी हूँ और गधों के बारे में कुछ भी नहीं जानता हूँ. इस पूरे शहर में शायद की कोई आदमी गधों के बारे में मुझ से ज़्यादा जानता हो."
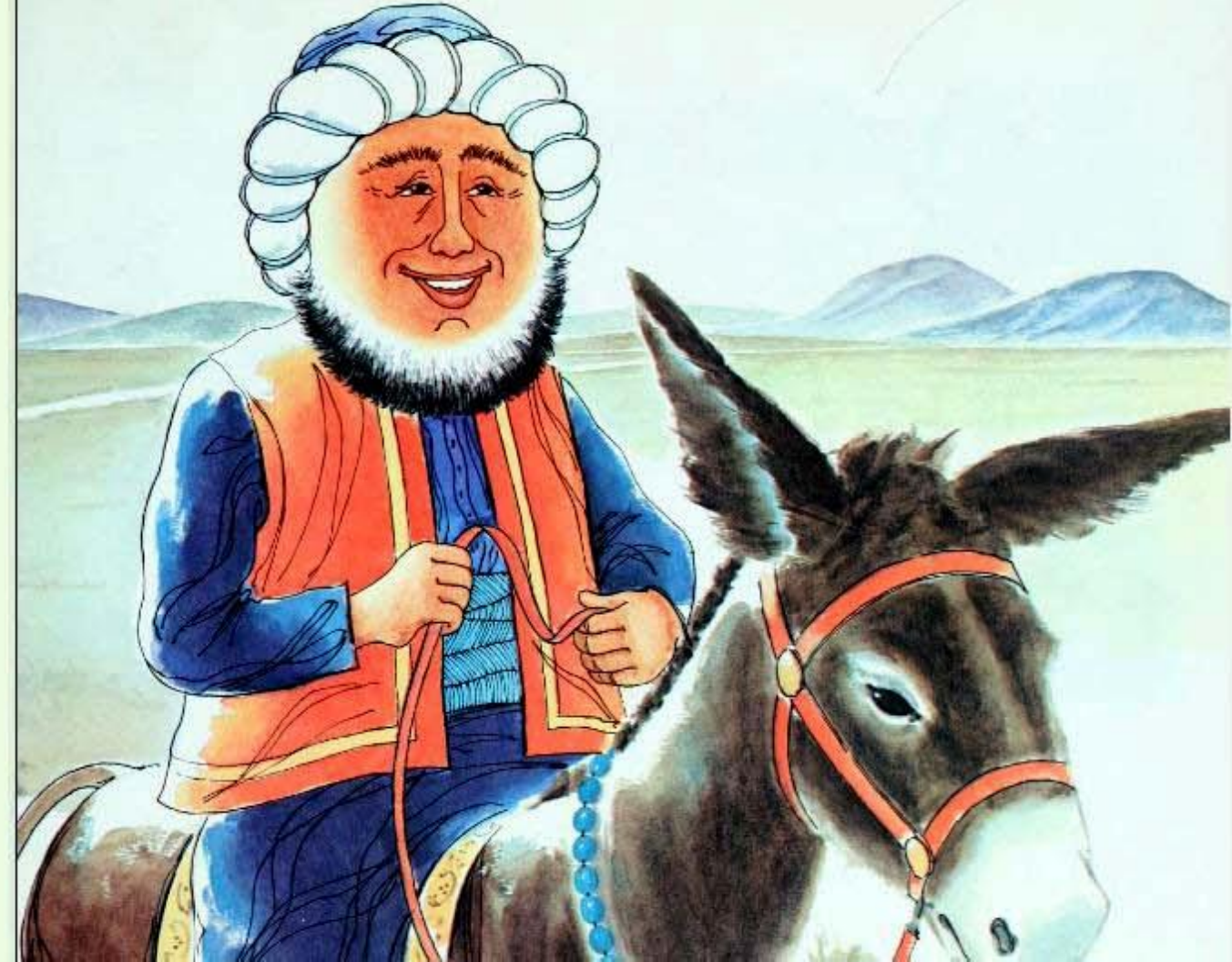
होजा ने अपनी आलसी आँखें आराम से सड़क पर टिकाईं. सबसे पहले उसने मिल घाटी से निकलने वाले एक झरने वाला रास्ता लिया.

वो झरना गेहूं को पीसने के लिए भारी पत्थरों को चलाता था. फिर सड़क एक पहाड़ी के ऊपर जाकर गायब हो गई.

"बस उस पहाड़ी के पार," उसने संतोष व्यक्त किया, "वो शहर है जहाँ वे लोग अपने-अपने गधों की प्रतीक्षा कर रहे होंगे. इन छोटे जीवों में से किसी एक के शरीर पर भी खरोंच का कोई निशान नहीं है. पूरे तुर्की में इन गधों से बेहतर सलूक किसी अन्य गधे के साथ नहीं किया गया होगा."

फिर होजा बारी-बारी से अपने गधों को गिनने लगा.

"क्या?" उसने हांफते हुए कहा. "सिर्फ आठ गधे?"

फिर वो अपने गधे से नीचे कूदा.

वो यहां-वहां दौड़ा,

उसने इधर-उधर चट्टानों और पहाड़ी पर देखा,

लेकिन उसे वहां कोई आवारा गधा दिखाई नहीं दिया.

अंत में वो गधों के पास खड़ा होकर उन्हें दुबारा फिर से गिनने लगा.

इस बार नौ गधे थे.

होजा ने राहत की सांस ली और फिर वो अपने गधे पर चढ़ गया और सड़क पर आगे बढ़ा. उसकी ढीली पतलून में से उसके लंबे पैर गधे की चाल के साथ-साथ आगे-पीछे झूल रहे थे.

पेड़ों के एक समूह से गुजरते हुए, होजा ने सोचा कि
उसे गधों को फिर से गिनना चाहिए.
"एक-दो-तीन-" और इस तरह उसने आठ गधे गिने,
लेकिन उसे नौवां गधा कहीं दिखाई नहीं दिया.

वो तुरंत अपने गधे की पीठ से नीचे कूदा. उसने सावधानी से सभी पेड़ों के पीछे झाँक कर देखा. लेकिन वहां उसे गधे का एक भी बाल नहीं मिला.

खुद अपने गधों के पास खड़े होकर उसने उन्हें दुबारा गिना. वो कुल मिलकर नौ छोटे गधे थे जो आगे बढ़ने के लिए उसके आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे. नसरुद्दीन होजा ने घबराहट में अपने सिर को खरोंचा. क्या उसका दिमाग ख़राब हो गया था, या क्या फिर वे गधे जादुई थे?

उसने उन्हें फिर से गिना. हां, वे निश्चित रूप से नौ थे.

"अर्रे, अर्रे, अर्रे....." नसरुद्दीन होजा ने यह आवाज़ निकाली जो तुर्की में "गिदाप!" के लिए इस्तेमाल किया जाता है.

जब वो सवार हुआ, तो उसने उन बुरी आत्माओं के बारे में सोचा, जो उसे परेशान करने के लिए उसपर चालें खेल रही थीं. प्रत्येक गधे के गले में बुरी आत्माओं को दूर भगाने के लिए नीले मोतियों की माला लटकी थी. क्या बुरी आत्माएं नीले मोतियों से भी अधिक ताकतवर थीं?

तभी होजा ने सड़क पर अपने एक दोस्त को आते हुए देखा.

दोस्त को देखकर वो बहुत खुश हुआ.

"सुनो, मुस्तफा इफेंडी," वो चिल्लाया. "क्या आपने मेरे एक गधे को देखा है? लगता है मेरा एक गधा खो गया है, और शायद नहीं भी खोया है."

"तुम्हारा क्या मतलब है होजा?" मुस्तफा ने पूछा.

"मैंने नौ गधों के साथ आटा चक्की को छोड़ा था," होजा ने समझाया. "रास्ते में गिनने पर कभी नौ गधे और कभी आठ गधे हुए. लगता है मुझे किसी की बुरी नज़र लगी है! मेरी मदद करो! भाई, मेरी मदद करो!"

वैसे मुस्तफा, होजा के तौर-तरीकों से वाकिफ था,
लेकिन अब वो भी आश्चर्यचकित था.

उसने चुपचाप गधों को गिना.

"मुझे दिखाओ कि तुमने कैसे गधों को गिना?"
उसने होजा को आदेश दिया.
"एक - दो - तीन," होजा ने शुरू किया.
फिर हर गधे की ओर इशारा करते हुए
उसने आठ तक गिना.
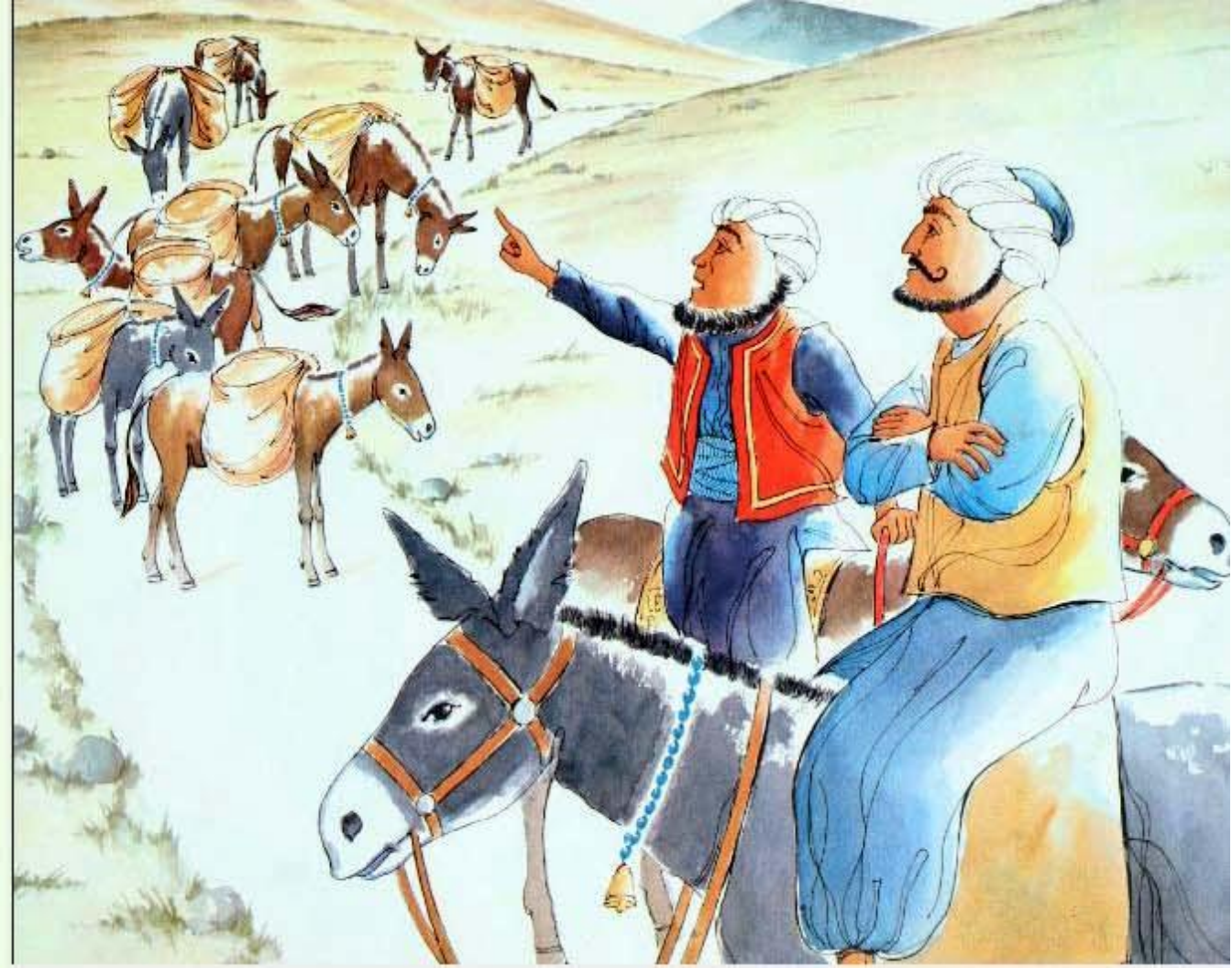
अंतिम संख्या कहने के बाद होजा रुक गया
और फिर बड़ी बेबसी और उदास चेहरे के
साथ वो अपने दोस्त को देखने लगा.

होजा का आतंक तब विस्मय में बदला जब मुस्तफा ने उसके घुटने पर ज़ोर से अपना हाथ मारा. मुस्तफा तब तक हंसा जब तक वो लगभग अपने गधे से गिर नहीं गया.

"इसमें हंसने की क्या बात है?" होजा ने पूछा.

"अरे, होजा!" मुस्तफा ने हंसते हुए कहा. "जब तुमने अपने भाइयों की गिनती की तब तुमने अपने उस भाई की गिनती क्यों नहीं की जिस पर तुम खुद सवार थे?"

इस खोज के बाद नसरुद्दीन होजा एक पल के लिए चुप और शांत रहा. फिर उसने अपने दोस्त का हाथ चूमा, उसे अपने माथे से लगाया, और मदद के लिए उसे हज़ार बार धन्यवाद दिया.

फिर गधों को उनके मालिकों तक पहुंचाने के लिए होजा आखिरी बार अपने गधे पर सवार हुआ और गाना गुनगुनाने लगा.

समाप्त